वॉल स्ट्रीट की हस्तरेखा शास्त्री

फ्रेम

मेरे बच्चे मुझे दूर से देख रहे थे। वे मुस्कुरा रहे थे, लेकिन तीनों में से कोई पास नहीं आया। वे अपनी माँ केसाथ फुसफुसा रहे थे, और उन फुसफुसाहटों में मैं सुन सकता था: माँ, आख़िर हमारे पिता कौन हैं?

जैविक अर्थ में नहीं। इस अर्थ में कि क्या उन्हें वह पागलपन विरासत में मिला था जिसे ब्रांड "क्षमता" कहता था और समाज "पागलपन" कहता था — क्योंकि उसे कहीं भी दर्ज नहीं किया जा सकता था।

मैं अपने कुछ दोस्तों से मिलने अपने न्यूयॉर्क वापस गया था। उसी शाम हम बोस्टन के लिए उड़े, मेरी माँ का घर।

मेन स्ट्रीट पर हमेशा वाला रेस्तरां इंतज़ार कर रहा था: लॉबस्टर और लिंगुइनी। दो सिसिलियन भाई, जिनका लहज़ा पालेर्मो और मैसाचुसेट्स का मिश्रण था। यह "वंस अपॉन अ टाइम इन अमेरिका" जैसा महसूस हुआ — सिवाय इसके कि इस बार साउंडट्रैक मैं ख़ुद लिख रहा था, अपने ही चुटकुलों के साथ।

उन दोनों में से एक ने अगले दिन, देर सुबह मुझसे मिलने को कहा। मुझे समझ नहीं आया वह क्या चाहता था। मैं उसे दोपहर के क़रीब घाट पर मिला। उसने मेरी बाँह पकड़ी: "फ्रेगा, MAGIC के साथ तुम्हारा क्या रिश्ता है?"

"निर्भर करता है। संपादकीय वाला, मैं समझा सकता हूँ। बिक्री वाला, मैं गढ़ सकता हूँ। बाक़ी, मुझे नहीं पता।"

"नहीं, नहीं। मैं चुड़ैलों और भविष्यवक्ताओं की बात कर रहा हूँ। भारत केभारतीय सबसे पहले थे। फिर अफ़्रीकी सैंतेरिया। सब बुराई से रीति-रिवाज़ों के ज़रिए लड़ते थे।"

वह अच्छी तरह सूचित था। मैंने अनजान बनने का नाटक किया। उसने आगे बढ़ते हुए कहा: "मैं तुम्हें अपने एक दोस्त के पास ले जाना चाहता हूँ, तुम्हारे कार्ड पढ़वाने के लिए।"

"नोटरी के कार्ड मैं घर छोड़ आया। पोकर मैंने छोड़ दिया।"

वह हँस पड़ा: "वे कार्ड नहीं। टैरो।"

"क्या टैरो सिसिली के संतरे की एक क़िस्म है?"

"गधे मत बनो, फ्रेगा। हमेशा का वही कमीना। चलो चलें।"

पैदल बीस मिनट, चार ब्लॉक। हम पहुँच गए।

एक पुर्तगाली महिला, बानबे साल की, सिगार जलाए हुए। "साले, तुम आ ही गए। मैं तुम्हारा काफ़ी देर से इंतज़ार कर रही हूँ। जूलियाना और उसकी भारतीय दोस्त कल सुबह यहाँथीं। वे बहुत नाराज़ हैं। उस gillettenarrative.com के

साथ तुम जो गड़बड़ मचा रहे हो, उसमें फँसी हुई। तुम्हें ख़रीदा नहीं जा सकता। तुम्हें बेचा नहीं जा सकता। तुम्हें ख़र्च नहीं किया जा सकता।"

मैं पागलों की तरह हँस रहा था। यह सपने जैसा लग रहा था। मेरे दोस्त ने मुझे चिकोटी काटी: "यह हॉलीवुड नहीं है। यह मेन स्ट्रीट है।"

उसने पढ़ना शुरू किया। मुझसे कहा कि पैर मत क्रॉस करो। गंभीर रहो। एक बिंदु पर, एक आवाज़ आई — एक आत्मा, दूसरी तरफ़ से एक प्रतिध्वनि:

"फ्रेगा, क्या यह सच है, जो तुमने गिलेट सागा के खंड 15 में लिखा था?"

मैं ज़ोर से हँस पड़ा। हस्तरेखा शास्त्री, निराश होकर: "यहाँ जादू की ज़रूरत नहीं है। टैरो की ज़रूरत नहीं है। सिर्फ़ प्रार्थनाओं की ज़रूरत है।"

Ferdinando Frega